परिवारजनों के साथ हँसी-मज़ाक-मस्ती

UNDER MOBILE LEARNING RESOURCE CENTER PROJECT

Innovative Educational Engagement for Children

यूनिसेफ एवं बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना के सहयोग से
रोहिणी साइंस क्लब द्वारा संचालित प्रोजेक्ट के तहत् विकसित

COVID-19 कोरोना वायरस महामारी के प्रकोप के कारण मार्च 2020 से स्कूल बंद हैं। इस दौरान बच्चे घर पर हैं और इनकी पढ़ाई का ख्याल रखते हुए सरकार ने डिजिटल कंटेंट तैयार कर दूरदर्शन के माध्यम से लगातार प्रसारित करने की कोशिश की है। इस दौरान WhatsApp जैसे सोशल मिडिया प्लेटफार्म का भी बच्चों की पढ़ाई के लिए प्रयोग में लाया गया।

इस दिशा में किये गए प्रारंभिक प्रयासों ने कुछ उम्मीद बांधी है। इससे बच्चों में "सीखने" के प्रति दिलचस्पी बढ़ी है जो उनके ज्ञानवर्धन में भविष्य में सहायक भी हो सकता है। इस क्रम में एक नई सम्भावना जो दिख रही है वह है "थीम बेस्ड लर्निंग" अर्थात "घर पर रहकर सीखना"। हम सभी जानते है कि बच्चे घर पर हो या स्कूल में, वे हमेशा कुछ न कुछ सीखते जरुर हैं। जो बच्चे घर पर रहकर इन दिनों करीब से घर की सम्पूर्ण गतिविधियों को देख रहे हैं – उनके लिए "घर" कुछ नया सीखने के लिए बेशुमार अवसर देता है। इसी विषयवस्तु को लेकर एक पाठ्यक्रम तैयार किया गया है जिसके अंतर्गत दस थीम (विषयवस्तु) का चयन किया गया है जिसके सम्बन्ध में विस्तार से अलग–अलग थीम पुस्तिकाओं में आप शैक्षिक सामग्री देख सकेंगे।

हमारी कुछ भ्रांतियाँ भी है जिसे स्पष्ट करना जरूरी है।

➡ COVID में स्कूल बंद है तो क्या बच्चों का 'सीखना' भी बंद है? जी नहीं। बच्चे घर पर रहकर भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।

➡ घर पर किताब–कॉपी लेकर बच्चे नहीं बैठे हैं इसलिए 'सीखना' संभव नहीं है। यह बात भी सही नहीं है। सीखने के लिए हमेशा किताब व् कॉपी को होना जरूरी नहीं है।

➡ खेलते बच्चे, सिर्फ खेलते हैं, सीखते कुछ नहीं, यह भी बात सही नहीं है। खेलते हुए भी बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं जो उनके जीवन में काम आता है, जैसे – टीम भावना से खेलना, हार को स्वीकार करना, चुनौती लेना आदि।

➡ गीत गाते, नाचते–कूदते, दौड़–भाग करते, बच्चे कुछ सीखते नहीं हैं, यह बात भी सही नहीं है। खेलने–कूदने से बच्चों में शारीरिक चपलता और स्फूर्ति पैदा होती है जो तंदरुस्त और खुशमिजाजी बने रहने में सहायक होता है।

इसलिए कहा जाता है – सीखना एक जन्मजात प्रवृति है। हम कहीं भी रहकर सीख सकते हैं। हर परिस्थिति से कुछ सीख सकते हैं। हाँ, स्कूली पाठ्यक्रम से इसका कितना अंश जुड़ा है यह तय करने की हमें जरूरत है।

प्रश्नोतर

1. परिवार में खुश रहने के लिए परिवारजनों को क्या करना चाहिए?
2. कम पैसों में जीने वाले परिवार कैसे खुश रहते होगें?
3. पता लगाएँ हमारे घर में लोग आपस में कितना बातचीत करते हैं?इसके क्या परिणाम होगें, सोचे।
4. घर के सभी काम महत्वपूर्ण है, इसपर आपके विचार बताएं।
5. घर में पैसे कमाकर लाने वाले की ज्यादा पूछ होती है, क्या यह सही है?
6. घर में माँ और बहन की भूमिकाओं को आप कैसे देखते हैं?
7. परिवार के सभी कामगार काम करने के लिए जा रहे थे। यात्रा के क्रम में सभी लोगों का औजार एक–दूसरे के साथ मिल गये हैं। प्रत्येक कामगार के सामान को उन्हें वापस दें।

दवाइयाँ	आरी
मोची का त्रिकोना(नौरंगा)	हथौड़ा
टेप(फीता)	घड़ा
टकुआ	ब्रश
कुदाल	कैंची
वर्मा कमानी	सुराही
सिलाई मशीन	इंजेक्शन

8. विभिन्न परिवारों के किसी लोहार, बढ़ई या कुम्हार से बातचीत करो और उनके काम के बारे में पता लगाओ।
9. परिवार के ये सभी कामगार अपना काम कहाँ से सीखें?
10. कामगारां को काम के दौरान क्या–क्या चीजें सीखनी पड़ती हैं?
11. क्या उन्होनें अपना काम अपने परिवार में किसी और को भी सिखाया है?

थीम बेस्ड लर्निंग

'थीम बेस्ड लर्निंग' के अंतर्गत हम यहाँ उन विषयों को ले रहे हैं जो हमारे घर और दैनिक क्रियाकलापों एवं गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। इसके माध्यम से बच्चों को उनकी रचनात्मकता और विचारों का बेहतर उपयोग करने का अवसर मिलता है। बच्चों में इस दौरान चीजों को एक नई दृष्टि से देखने, उसमें नवीनता की खोज करने, उनको मूर्त रूप देने, डिजाइन करने के साथ–साथ उससे सम्बंधित सामग्री को पढ़ने व उस विषय पर लिखने जैसी एक नई प्रवृति के पनपने की भी सम्भावना है। आगे चलकर इस सीख को बच्चे अपने समुदाय व स्कूल में प्रस्तुत भी कर सकेंगे। हम अपने घर की सभी गतिविधियों को अगर गौर से देखे तो पाएंगे कि उसमें ढ़ेर सारी सीखने की सम्भावना है। जो बच्चे घर पर रहकर इन दिनों करीब से यह सब कुछ देख रहे हैं, बढ़–चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं एवं अपने परिवारजनों को मदद भी कर रहे हैं– उनके लिए "घर" सीखने के बेशुमार अवसर देता है। घर की गतिविधियों पर अगर हम एक नजर डालते हैं तो देखते हैं कि वहाँ – भोजन की व्यवस्था, साफ–सफाई, नहाना–धोना, कपडे साफ करना, छोटे बच्चों की देख–रेख, बाजार का काम, पशुओं की देख–रेख, कृषि कार्य, जैसे बहुत से काम होते हैं।

बच्चे अपने आस–पास के वातावरण से बहुत कुछ सीखते हैं। कभी देखकर, कभी अनुसरण कर, कभी बोलकर, कभी सुनकर, कभी अभ्यास कर तो कभी उपयोग कर आदि। कई तरीकों से बच्चे सीखते रहते हैं। लोगों से अंतःक्रिया कर अपने अनुभवों के आधार पर वह समझदारी हासिल करते हैं। सीखने की यह प्रक्रिया उनके व्यवहार में परिवर्तन के पूर्व होती है। इसलिए कहते हैं 'सीखना' बार–बार अभ्यास का परिणाम है।

आज COVID-19 महामारी की स्थिति के कारण, घर पर लंबे समय तक रह गए बच्चों की रुचि और उनकी मानसिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए इन सामग्रियों को तैयार करने की कोशिश की गई है। बच्चों को मौजूदा हालातों में खुश रहने, खेलने–कूदने के साथ–साथ पढाई में भी रूचि पैदा करने के लिए यह एक जरिया बन सकता है।

आइये, देखते हैं सीखने के लिए क्या–क्या जरूरी है :–

- बच्चे उस वातावरण में बेहतर सीखते हैं जब उन्हें लगता है कि वे महत्वपूर्ण हैं।
- बच्चे सक्रिय भागीदारी से सीखते हैं।
- बच्चे स्वयं प्रयोग करते हुए सीखते हैं।
- बच्चे बातचीत, अंतःक्रिया और विवेचना से सीखते हैं।
- बच्चे अपने अनुभवों से सीखते हैं।
- बच्चे पूर्वज्ञान के साथ जोड़कर सीखते हैं।
- बच्चे सवाल पूछ कर, जाँच–परख कर सीखते हैं।

हम सभी जानते है कि सीखना अपने आप में एक सक्रिय व् सामाजिक गतिविधि है। कैसे सीखना है, यह भी एक सीख है (Learning to Learn) बच्चे सीखने के क्रम में तब सीखेंगे जब :–

- बच्चे चिंतनशील बनेंगे।
- बच्चे खोजी प्रवृति के बनेंगे।
- बच्चे सृजनशील कार्य में रुचि लेंगे।
- नए कार्यों को करके आजमाएंगे।
- जोड़–तोड़ कर समस्या का हल निकालना सीखेंगे।
- अपनी गलतियाँ खुद सुधारेंगे।
- गलती के डर से पहल नहीं करना, जैसी मानसिकता से उभरेंगे।
- असफलताओं से ही सफलता की कहानी लिखी जाती है, यह जानेंगे।

होम बेस्ड लर्निंग, शिक्षकों को भी स्कूल के बच्चों के संरक्षक के रूप में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करेगा ताकि वे बेहतर सीख के साथ कल जब स्कूल खुलेंगे तब अपना कक्षा विनिमयन कर सकेंगे। इसी प्रकार माता–पिता और अभिभावक भी होम बेस्ड लर्निंग की अवधारणा को बच्चों की आवश्यकता और आकांक्षाओं से जोड़ कर देख सकेंगे। उम्मीद है कि वे बच्चों को घरों में एक बेहतर 'सीखने का माहौल' देने में सक्षम होंगे जिससे परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बच्चों का एक अच्छा तालमेल बना रहे।

कभी तो सुनो! परिवार वालों!

- ☆ लड़की के मानसिक एंव शरीरिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है कि उसकी शादी 18 वर्ष की उम्र के बाद ही की जाए।
- ☆ 18 वर्ष से कम उम्र में लड़की के प्रसव को डॉक्टर अत्यन्त जोखिम भरा मानते हैं। इस उम्र में प्रसव के समय माँ की मृत्यु होने का खतरा रहता है।
- ☆ इस उम्र में प्रसव होने से प्रसूति संबंधी कई गंभीर बीमारियाँ माँ को लग सकती हैं, जिसकी तकलीफ उसे जीवन भर उठानी पड़ सकती है।
- ☆ 35 वर्ष की उम्र के बाद का प्रसव भी माँ और बच्चे दोनों के लिए घातक हो सकता है।
- ☆ माँ तथा बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य के लिए बच्चों के जन्म के बीच अंतर रखना चाहिए।
- ☆ बार–बार एंव जल्दी जल्दी गर्भधारण करने से महिलाओं की सेहत पर बहुत बुरा असर पड़ता है।
- ☆ इससे शारीरिक क्षमता में कमी आती है। शरीर की बनावट बेडौल हो जाती है।
- ☆ महिलाएं स्वयं के स्वास्थ्य एंव सौंदर्य की देखभाल के प्रति लापरवाह हो जाती हैं।
- ☆ हमारे देश में पुत्र जन्म की लालसा से जनसंख्या बढ़ रही है।
- ☆ बेटे व बेटी के बीच भेदभाव नहीं करें।
- ☆ बेटा हो या बेटी, दो संतानों के बाद परिवार को सीमित कर लेना चाहिए।
- ☆ परिवार सीमित करने के लिए डॉक्टर की सलाह से परिवार नियोजन के साधन उपयोग में लाए जा सकते हैं।
- ☆ जनसंख्या वृद्धि देश के आर्थिक व सामाजिक विकास की गति को रोकती है।
- ☆ जनसंख्या वृद्धि के कारण देश में महँगाई, भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी, भोजन की समस्या, आवास की समस्या, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी तथा निरक्षरता जैसी समस्यांए निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। इसके लिए जरूरी है कि जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाई जाए।

☆ अनैतिक यौन सम्बन्ध भी एड्स का कारण है, अतः सावधानी बरतें।

☆ इस उम्र से आगे का जीवन जिम्मेदारीपूर्ण व महत्वपूर्ण है, अतः सोच–समझ कर कदम उठाएं।

घर परिवारजनों के लिए

बाजार में कम नाप–तौल, मूल्यवृद्धि, मिलावट, जमाखोरी, नकली सामान आदि के द्वारा उपभोक्ताओं को ठगा जाता है। इसके लिए निम्न सावधानियाँ रखें :–

☆ ग्राहको में जागरुकता बढ़ाने के लिए ''जागो ग्राहक जागो'' कैंपेन वर्ष 2005 में शुरु की गई थी। इसको समझें और इसका लाभ उठाएं।

☆ कोई भी वस्तु खरीदते समय गुणवत्ता एंव कीमत की जानकारी अवश्य लें।

☆ खरीदी जाने वाली वस्तु की मात्रा एंव गारंटी के बारे में अवश्य पूछें।

☆ खरीदी गई सामग्री का बिल अवश्य लें।

☆ तरल पदार्थ लीटर में ही खरीदें।

☆ बिजली के उपकरण, घरेलू उपकरण के साथ गारंटी/वारंटी कार्ड अवश्य लें।

☆ कीमत की पूछताछ करें एंव देखें कि वही कीमत वस्तु (उत्पाद) पर अंकित हो।

☆ खाने की वस्तुएँ एगमार्क एंव उपभोग की वस्तुएँ आई.एस.आई. मार्क होनी चाहिए।

☆ प्रतिष्ठित कम्पनी का ही उत्पाद खरीदें।

☆ दवाई, प्रसाधन खाद्य सामग्री लेते समय एक्सपायरी डेट को अवश्य ध्यान रखें। यदि सामग्री एक्सपायरी डेट के बाद की है तो उसे वापिस कर दें।

☆ किलो बाट पर भी नजर डालें कि मानक के अनुरूप है या नहीं।

☆ उपभोक्ता फोरम की जानकारी अवश्य रखें। यदि आवश्यक हो तो उचित शुल्क जमा कर शिकायत अवश्य करे।

☆ कम नाप तौल या घटिया सामग्री का संदेश होने पर सम्बन्धित अधिकारी को शिकायत अवश्य करनी चाहिए।

☆ उपभोक्ताओं को शोषण से बचाने के लिए सरकार ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 लागू किया है जिसके अन्तर्गत दोषी पाए जाने पर जुर्माना और कैद का प्रावधान है।

परिवारजनों के साथ हँसी–मज़ाक–मस्ती

व्यक्ति का परिवार उसका छोटा संसार होता है। हम अपने जीवन में जो कुछ भी प्राप्त कर पाते हैं वह परिवार के सहयोग और समर्थन से संभव हो पाता है। हमारे पालन–पोषण को हमारा परिवार पहली प्राथमिकता समझता है और जब तक हम सक्षम नहीं हो जाते हमारी सभी जरुरतों की पूर्ति निःस्वार्थ भाव से करता है।

समाज में हमारे माता–पिता के नाम के साथ हमें पहचान दिलाने से लेकर हमारे माताजी–पिताजी को हमारे नाम से जानने तक, परिवार हमें हर प्रकार से सहयोग प्रदान करता है। अतः हमें परिवार के महत्व को समझने की चेष्टा करनी चाहिए। परिवार के लोग मिलजुल कर घर में हँसी–मजाक का, बातचीत करने का माहौल बनायें तो बच्चों को भी एक बड़ी सीख मिलती है। इसी के साथ घर में एक स्वस्थ परम्परा भी बनने लगती है। अपने घरों में, अपने परिवारजनों को खुशहाल जीवन व्यतीत करने के लिए हम सबको मिलजुल कर प्रयास करना चाहिए। आइये, आज हम इन्ही विषयों के इर्द–गिर्द रहकर अपनी बातचीत करेंगे। बातचीत के साथ–साथ कुछ काम भी करेंगे जिससे आप के अंदर विषयवस्तु की समझ बढ़ेगी और नये कौशल से आप समृद्ध होगें।

परिवार वंशवृक्ष

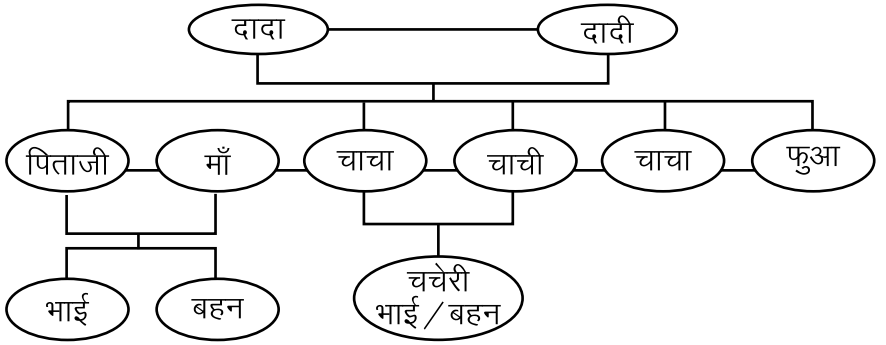

गीत/कविता

बिस्कुट के पेड़

मेरी प्यारी अच्छी नानी,
सुनाओ ऐसी एक कहानी,
जिसमें हों बिस्कुट के पेड़
हो चाकलेट, टॉफी के ढेर।
पापा जब दफ्तर से आएँ,
खूब खिलौने, संग में लाएँ।
मेरी प्यारी अच्छी नानी,
हमें सुनाओ एक कहानी।

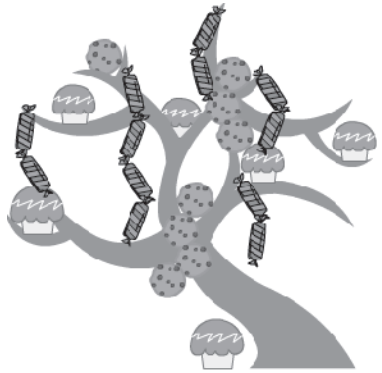

ऐसा क्यों होता है?

प्यारी मम्मी मुझे बताओ,
ऐसा क्यों होता, समझाओ।
सुबह–सुबह सूरज उगता,
चंदा क्यों छिप जाता है?
रोज रात को चाँद चमकता,
सूरज क्यों खो जाता है?
क्या दोनों आपस में लड़ते,
तभी नहीं वे बोला करते?
मेरे बेटे, तू है भोला,
यह धरती है बड़ा–सा गोला।
एक जगह जब चाँद चमकता,
सूरज दूजी तरफ निकलता।
ऐसे ही होते दिन–रात,
नहीं लड़ाई की कुछ बात।

जानियें

सुनो किशोरी बालिकाएं

☆ खाने के दैनिक व्यवहार में परिवर्त्तन लाएं।
☆ शरीर में आयरन की मात्रा का हमेशा ख्याल रखें।
☆ मच्छरों से बचकर रहना, नगें पांव कभी न चलना।
☆ नींबू, आंवला, संतरा, मुसंबी, अमरूद, केला, सेब का सेवन करना।
☆ मांस मछली कलेजी, अंडे, झींगी मछली अवश्य लेना।
☆ पकाना हो जब भी खाना लोहे की कड़ाही उपयोग में लाना।
☆ भोजन के एक घंटे बाद ही या पहले चाय को पीना।
☆ अनीमिया है खतरनाक बीमारी, कभी न इसकी जकड़ में फंसना।

किशोरावस्था संबंधी जीवनोपयोगी सीख

किशोरावस्था, बाल्यावस्था व युवावस्था 11–18 वर्ष तक के बीच मानी जाती है। इसमें शरीरिक, मानसिक व भावात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। इन परिवर्तनों का कारण हारमोन्स हैं। यह अत्यन्त संवेदनशील अवस्था है। इस अवस्था में ध्यान रखने योग्य जीवनोपयोगी सीखः–

☆ तथ्यों की जानकारी से अन्धविश्वास दूर भगाएं।
☆ जो व्यक्ति जरूरत से ज्यादा निकटता दिखाए उससे सचेत रहें।
☆ किसी के बहकावे व फुसलावे में न आवें।
☆ देर रात्रि तक घर से बाहर न रहें। कुसंगत से जीवन, समय एंव धन नष्ट होता है।
☆ अपनी कठिनाई को अपने तक सीमित न रखें बल्कि अपने माता–पिता से कहें। जिससे आप हाने वाले शोषण से बच सके। माता–पिता को मित्र समझें।
☆ चरित्र में दृढ़ता लाएं और भय मुक्त जीवन जीएं। अनावश्यक दिखावे से बचें।
☆ किसी मुसिबत में तुरंत सहायता के लिए 1098 पर सम्पर्क करें।

सभी जानते हैं। लेकिन कुछ नये खेल भी खेले जा सकते हैं जैसे यहाँ बताया जा रहा है। परिवार के सभी लोग इकट्टे बैठ कर यह खेल खेल सकते हैं। कोई एक व्यक्ति खेल का प्रारंभ करें और पूछे कि, कौन यह बतायेंगे कि घर के किस जगह पर पुराने जूतों का डब्बा रखा हुआ है? पूछे जानेवाले कुछ प्रश्न ऐसे भी हो सकते हैं–माचिस का डब्बा कहाँ है?, हथौड़ा कहाँ रखा है?, औजार पेटी कहाँ है?, प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स कहाँ है? आदि

परिवार के कोई भी सदस्य इसका जवाब दे सकते हैं। खेल को मजेदार बनाने के लिए इस तरह के प्रश्नों का पुर्जा बनाकर डब्बे में रख लें। किसी भी परिवार के सदस्य के पास आप जांए और उन्हें पुर्जा उठाकर प्रश्न पढ़ने और उसका जवाब देने को कहें। बस इसी तरह यह खेल मजेदार तरीके से खेला जा सकता है। हाँ, इस खेल के लिए पूर्व से ही प्रश्न तैयार कर लें और उसे कागज पर लिखकर उसके छोटे–छोटे टुकड़ों को मोड़कर तैयार रख लें।

स्मरण शक्ति बढ़ाने का खेल

समूह में परिवारजनों को बिठाएँ। अब एक चादर पर अनेक प्रकार की वस्तुएँ जैसे पिन, कलम, कागज,बटन, चना, दालें, माचिस आदि जैसी छोटी–छोटी चीजें रखकर उसे एक कपड़े से ढंक दें। ध्यान रहे प्रतिभागी पहले से उन वस्तुओं को नहीं देखें।

अब परिवारजनों को टेबुल के चारों तरफ बुलाएँ और 30 सेकेण्ड के लिए टेबुल से कपड़ा हटा लें। प्रतिभागियों को सभी वस्तुएँ केवल दिखाएँ, कुछ बोलें नहीं।

अब सभी परिवारजन अपनी–अपनी जगह पर जाकर बैठ जायें। आप परिवारजनों से यह पूछेंगे कि आपने टेबूल पर क्या–क्या चीजें देखीं हैं? जो सदस्य सबसे ज्यादा चीजों को देखकर स्मरण कर पायेगा, वह विजेता होगा।

उद्देश्यः– खेल का उद्देश्य यह है कि हम किसी भी वस्तु या प्रक्रिया पर कितना ध्यान केन्द्रित करते हैं या पैनी दृष्टि रखते हैं।

मकान

हर इंसान जुटा रहता है
रोटी कपड़ा और मकान में
साँझ ढले सभी आते हैं
अपने उसी मकान में

क्या चिड़िया क्या पशु क्या है इंसान
हर कोई चाहता रहने को बस इक मकान
शहरों में गाँवों में बस्तियों में देखे अनेक मकान
कहीं खपरैला, कहीं, दुमंजिला तो कही महल की खान
रहने वालों से पूछा कैसा लगता है ये मकान
उसने कहा स्वर्ग कहीं है तो बस यही अपना मकान

पिता जी

हमारे पिता जी बड़े निराले
हम उनके बच्चे मतवाले
काम से घर वापिस आकर
वो ना बैठे ठालम ठाले
हमारे पिता जी बड़े निराले।
मेरे साथ खेल वो खेलें
छोटू को वो गोदी ले लें।
हम बच्चों के नखरे झेले।
मौका पड़े तो रोटी बेले।
हमारे पिता जी बड़े निराले
हम उनके बच्चे मतवाले

कितने अच्छे

जितने अच्छे पापा लगते
अपनी मोटर गाड़ी में
उनसे अच्छी मम्मी लगती
खादी वाली साड़ी में।

गुब्बारे–सा फूला बबुआ
हो जिस तरह कबूतर पर
वैसे ही चाचा लगते हैं
मोटे से,स्कूटर पर

चाची जी अच्छी लगती हैं
रंग बिरंगी साड़ी में
मामी जी घूँघट में लगतीं
जैसे बिल्ली झाड़ी में।

एक शब्द बताएं

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बताइए:-

1. जो व्यक्ति न्याय पंसद करता हो (न्यायप्रिय)
2. जो राजा प्रजा का पालन करता हो (प्रजा–पालक)
3. जो सदा सत्य बोलता हो (सत्यवादी)
4. परिश्रम करने वाला (परिश्रमी)
5. जो प्रशंसा करे (प्रशंसक)
6. जिसे लज्जा न आती हो (निर्लज्ज)
7. दया करने योग्य (दयनीय)
8. बहुत कम जानने वाला (अल्पज्ञ)

को ब्लेड से 1 सें. मी. दूरी तक काट लें। गोल सींक के दूसरे सिरे रील में डालकर धागे को बाहर निकालें। अब गोल सींक को आधा चक्कर घुमाकर वापस रील में डाल दें। इस तरह धागे का एक घुमाव सींक से होकर गुजरेगा। चार्ट पेपर के टुकड़े के एक तरफ परिवार का चित्र तथा दूसरी ओर घर का चित्र बना दें। अब घिरनी घुमाएं तो देखेंगें कि चार्ट पेपर का टुकड़ा तेजी से घूम रहा है जिसके चलते हमें यह एहसास होता है कि घर में सभी परिवारजन हैं।

दादी मां क्या ढूंढ रही हो

सभी बच्चों को एक गोल घेरे में बैठा दिया जाए। अध्यापक किसी बच्चे को दादी मां बनने को कहें या स्वयं बनकर गोल दायरे में बैठ जाए और जमीन पर ऐसा अभिनय करें, जिससे कुछ ढूंढने जैसा लगे। सभी बच्चे पूछेंगे, दादी मां दादी मां! क्या ढूंढ रही हो? दादी मां कहेगी–सूईं। सभी (दादी मां से)– सूई का क्या करोगी? दादी मां बना बच्चा–थैली सीऊंगी। सभी बच्चे–थैले का क्या करोगी? पैसा इकट्ठा करूंगी। दादी मां–दादी मां! पैसे का क्या करोगी? दादी मां–भैंस खरीदूंगी। इसी मरह से बात को आगे बढ़ाते रहेंगे एवं खेल चलता रहेगा। विभिन्न वाक्यों को जोड़कर इसे और भी आगे बढ़ाया जा सकता है।

कौन चीज कहाँ है-बताएं

कभी–कभी परिवार जनों के साथ बैठ कर हम कई तरह के खेल/गतिविधियाँ कर सकते हैं। ऐसे में सभी मिलजुल कर एक–दूसरे से बातचीत करते हैं। मौज–मस्ती करते हैं और यह सबकों अच्छा लगता है। जैसे– अंताक्षरी, गीतों के अंतिम अक्षर से गीत गाना जैसे खेल तो हम

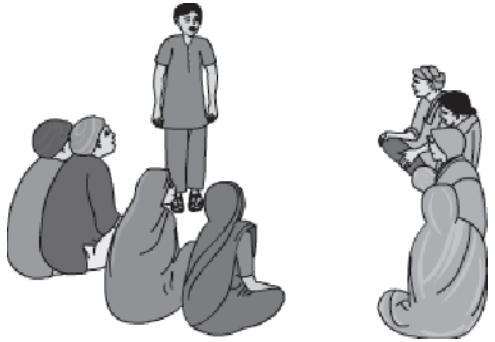

- प्रस्तुति के लिए चित्रों, अखबारों व पुराने मैग्जीन के तस्वीर, आलेख आदि का सहारा ले सकते हैं।
- जब मकान में सजीव रहना शुरु करते हैं तभी वो ''मकान'' ''घर'' कहलाता है।

खेल-खिलौना

कोरोना काल में बच्चे परिवार के साथ हैं।

आइये एक खिलौना बनाएं

जब हम किसी भी वस्तु को अपनी आँखों से देखते हैं, उस वक्त उस वस्तु का प्रतिबिम्ब हमारे आँख के रेटिना पर 1/10 सेकेण्ड तक रहता है। अगर वह वस्तु हमारी आँखों के सामने से हटा भी ली जाए तो भी हम उसे कुछ क्षण के लिए देखते रहते हैं। यही दृष्टि निर्बंध का सिद्धांत है। परंपरागत बढ़ई के बरमें पर आधारित इस मजेदार खिलौने से इस सिद्धांत को स्पष्ट रूप से दर्शाया जा सकता है।

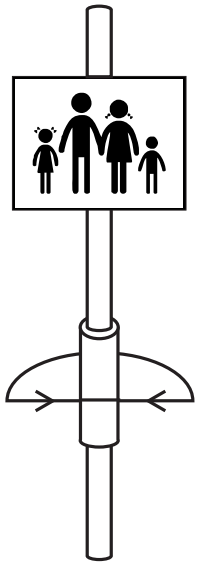

सामग्रीः धागे की एक खाली रील, डिवाइडर (परकाल) धागा, नारियल के झाड़ू की एक सींक फूल झाड़ू की एक गोल सींक और चार्ट पेपर।

एक धागे की पुरानी गत्ते की रील लें। उसके किसी एक छोर से 1 सेंटीमीटर की दूरी पर डिवाइडर (परकाल) की नोक से एक आर–पार छेद करें। इस छेद में से एक धागा पिरों दें। घागे के दोनों सिरों के धनुष के आकार में मुड़ी मजबूत नारियल के झाड़ू की सींक के दोनों सिरों से बांध दें। धनुष का धागा थोड़ा ढीला हो। अब 10 सेंमी लम्बी फूल–झाड़ू की एक गोल सींक लें। उसके एक सिरे

कहानी

मीना की आदत

मीना बहुत ही सुंदर लड़की थी। लेकिन उसे गुस्सा बहुत आता था। छोटी–छोटी बातों पर वह अपने भाई–बहनों से झगड़ा कर बैठती। उसकी माँ मीना की इस आदत से बहुत परेशानी थी। उसने मीना को काफी समझाया, पर गुस्सा आने पर वह किसी की बात सुनती ही न थी।

एक दिन मीना जहाँ बैठी पढ़ रही थी, वही मेज पर शीशे का एक फूलदान रखा था। उसमें रंग–बिरगे फूल सजे हुए थे। अचानक उसके भाई का हाथ लगते ही, वह मेज से नीचे गिर कर टूट गया। फूलदान का पानी गिरने से मीना की कापी खराब हो गई। इस पर मीना इतनी नाराज हुई कि उसकी आँखें लाल हो गई। वह दाँत किटकिटाने लगी। गुस्से से उसके होंठ काँपने लगे। उसका चेहरा अजीब–सा लगने लगा। उसकी यह हालत देखकर, उसकी माँ ने उसकी सूरत शीशे में दिखाई। मीना अपना इस तरह का चेहरा देख कर बहुत दुःखी हुई। धीरे–धीरे जब उसका गुस्सा ठंडा पड़ा तो वह फूट–फूट कर रोने लगी।

''तुम्हें एक शीशे की जरूरत है'' – उसकी माँ बोली, ''ताकि तुम देख सको कि गुस्से में तुम्हारा चेहरा कितना खराब लगता है। माँ की बात मीना की समझ में आ गई। उसी दिन से उसने गुस्सा न करने का वादा किया। धीरे–धीरे यह बुरी आदत उसने छोड़ दी। वह एक सुशील लड़की बन गई। अब वह और भी सुन्दर लगने लगी।

गुस्सा कभी नहीं करना चाहिए। अगर कोई गलती करे तो उसे धीरे–से समझाना चाहिए।

रिश्ते की पहचान

मां फोन पर बात कर रही थी, उनके फोन रखने पर प्रत्यूष ने पूछा,'' मां! तुम जीजाजी से बात कर रही थी?''

''हां! मेरे जीजाजी थे, मरी बहन के पति, मै उनकी साली हूं।'' मां ने समझाया।

''तुम्हारे जीजाजी मेरे कौन है?'' प्रत्युष ने जिज्ञासा की।

मां ने प्रत्यूष के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, '' मेरी बहन तुम्हारी मौसी लगती हैं, मेरे जीजाजी तुम्हारे मौसी हैं।''

''तुम्हारे भेया को मैं जानता हूं, मेरे मामा है, उनकी पत्नी मेरी मामी है।'' कहते हुए प्रत्युष मुस्करा उठा।

प्रत्युष को नाना–नानी और दादा–दादी के बोर में पता है, मां यह जानती थी, मां के पिता–माता को नाना–नानी कहते हैं, पिताजी के पिता–माता को दादा–दादी कहते हैं। वे बोलीं, ''तुम पिताजी के भाई को चाचा कहते हो। उनकी पत्नी को चाची कहते हो। तुम्हारे पिताजी की बहन और उनके पति हैं वे तुम्हारे कौन लगते हैं?''

''फुआ और फुफा!'' प्रत्यूष ने झट से कहा।

''बिलकुल ठीक है!'' मां ने शाबाशी देते हुए कहा, ''हम तुम्हारे माता–पिता हैं। तुम हमारे बेटा और निकी हमारी बेटी है। तुम्हारे दादा–दादी मेरे सास–ससुर हें, उसी तरह तुम्हारे नाना–नानी हैं। वे तुम्हारे पिताजी के सास–ससुर हैं।''

''हां! दादा–दादी मुझे पोता कहते हैं, वे लोग निकी को पोती कहते हैं। नाना–नानी हमें नाती और नतिनी कहते हैं।'' प्रत्यूष को रिश्तों को समझने में मन लग रहा था।

मां ने कहा, ''कुछ रिश्तेदार नजदीक रहते हैं, कुछ दूर रहते हैं, उन सबको

जानना चाहिए। रिश्ते से ही परिवारा बनता हैं परिवार में बहुत सारे रिश्ते होते हैं। दनके बीच एक संबंध होता है। उसे समझना चाहिए, मानना चाहिए। रिश्ते के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। इससे रिश्ता आगे बढ़ता है।''

''हमारे परिवार के सभी लोग एक–दूसरे के रिश्तेदार हैं?'' प्रत्यूष ने सवाल किया।

''हां! तुमने ठीक कहा।'' मां ने बताया, '' मां ने बताया, ''रिश्ते से व्यक्ति की पहचान बनती है, इसलिए रिश्ते को जानना चाहिये। उन्हें पहचानना चाहिये। उनसे संबंध बनाये रखना भी आवश्यकता है। उम्र या हैसियत के कारण रिश्ते को भूलना नही चाहिये।''

प्रत्यूष मां की बातें गौर से सुन रहा था। उसने कहा, ''लेकिन सभी रिश्तेदारों से हम मिल नही पाते।''

''हां! कुछ रिश्तेदार दूर रहते हैं, उनसे हम नहीं मिल पाते है, या कम मिल पाते है, पर उनके प्रति अपनापन में कमी नहीं रखनी चाहिए। उनसे भी संबंध बनाये रखना चाहिये। रिश्तों का निर्वाह हमारी इच्छा पर है। यदि हम चाहे तो यह काम कठिन नहीं है। लेकिन इसके लिये परिश्रम करना पड़ता है, थोड़ा त्याग भी जरूरी है।''

आभार :– प्रारंभ

करके सीखें

'घर ' और 'मकान' में अंतर

- किसी नये बनते हुए मकान को देखें तथा वहां पायी जाने वाली सामग्रियों–सजीव तथा निर्जीव दोनों की सूची बनायें।
- किसी बसे हुए 'घर' में पाई जाने वाली सभी निर्जीव सामग्रियों की सूची बनाये।
- 'मकान' तथा 'घर' के अंतर का उपरोक्त सूचनाओं के आधार पर समझाए।